

चतुर्थः पाठः

## चाणक्यवचनानि

चाणक्यः चन्द्रगुप्तमौर्यस्य गुरुः आसीत्। सः महान् राजनीतिज्ञः, अर्थशास्त्रज्ञश्च आसीत्। “चाणक्यनीतिः कौटिलीयमर्थशास्त्रञ्च” एतौ द्वौ ग्रन्थौ प्रसिद्धौ स्तः। चाणक्यः नन्दवंशस्य उन्मूलनं कृत्वा चन्द्रगुप्तमौर्यं सिंहासने स्थापितवान्। तस्य वचनानि अत्र प्रस्तूयन्ते —

माता शत्रुः पिता वैरी, येन बालो न पाठितः।  
न शोभते सभामध्ये, हंसमध्ये बको यथा॥ 1॥

अधमाः धनमिच्छन्ति, धनं मानं च मध्यमाः।  
उत्तमाः मानमिच्छन्ति, मानो हि महतां धनम्॥ 2॥

जलबिन्दुनिर्यातेन क्रमशः पूर्यते घटः।  
स हेतुः सर्वविद्यानां धर्मस्य च धनस्य च॥ 3॥

सुखार्थी चेत्यजेत् विद्यां, विद्यार्थी चेत्यजेत्सुखम्।  
सुखार्थिनः कुतो विद्या, विद्यार्थिनः कुतस्सुखम्॥ 4॥

तक्षकस्य विषं दन्ते मक्षिकायाः विषं मुखे।  
वृश्चिकस्य विषं पुच्छे, सर्वाङ्गे दुर्जनस्य तु॥ 5॥

कामधेनुगुणा विद्या सर्वदा फलदायिनी।  
प्रवासे मातृसदृशी विद्या गुप्तधनं स्मृतम्॥ 6॥

एकेनापि सुवृक्षेण पुष्पितेन सुगन्धिना।  
वासितं तद्वनं सर्वं सुपुत्रेण कुलं यथा॥ 7॥

### शब्दार्थाः

|          |   |                     |             |   |                          |
|----------|---|---------------------|-------------|---|--------------------------|
| बकः      | = | बगुला               | पुच्छे      | = | पूँछ में                 |
| महताम्   | = | श्रेष्ठ लोगों का    | प्रवासे     | = | यात्रा में               |
| अधमाः    | = | निम्न कोटि के (लोग) | वासितम्     | = | सुगन्धित                 |
| तक्षकः   | = | सर्प विशेष          | कामधेनुगुणा | = | इच्छा पूरी करने वाली गाय |
| मक्षिका  | = | मक्खी               |             | = | के समान गुण वाली         |
| वृश्चिकः | = | बिच्छू              | मातृसदृशी   | = | माता के समान             |

## अभ्यासः

### 1. एकपदेन उत्तरं लिखत-

- (क) अपाठितः बालः कुत्र न शोभते?
- (ख) महतां धनं किम्?
- (ग) तक्षकस्य विषं कुत्र वर्तते?
- (घ) प्रवासे विद्या कीदृशी भवति?
- (ङ) वृश्चिकस्य विषं कुत्र वर्तते?
- (च) मक्षिकायाः विषं कुत्र वर्तते?

### 2. एकवाक्येन उत्तरं लिखत-

- (क) के मानम् इच्छन्ति?
- (ख) सुखार्थी किं न प्राप्नोति?
- (ग) विद्यार्थी किं न प्राप्नोति?
- (घ) विद्या कीदृशं धनं भवति?
- (ङ) घटः कथं पूर्यते?

### 3. कोष्ठकात् उचितानि पदानि चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत-

- |                              |                 |
|------------------------------|-----------------|
| (क) ..... मानम् इच्छन्ति।    | (अधमाः/उत्तमाः) |
| (ख) विद्यार्थिनः कुतः .....। | (सुखम्/दुःखम्)  |
| (ग) मक्षिकायाः ..... विषम्।  | (पुच्छे/मुखे)   |
| (घ) सुपुत्रेण ..... यथा।     | (कुलं/वनं)      |
| (ङ) हंसमध्ये ..... यथा।      | (बकः/बालः)      |

### 4. अधोलिखितशब्दानां विलोमशब्दान् लिखत-

- (क) सुखार्थी —
- (ख) दुर्जनः —
- (ग) सत्यम् —
- (घ) गुणः —
- (ङ) धर्मः —
- (च) सुपुत्रः —

5. समानार्थकशब्दान् लिखत-

- (क) माता (ख) वनम् (ग) पुत्रः  
(घ) धनम्

6. पदानां विभक्तिं वचनं च लिखत-

|      | पदानि      | विभक्तिः | वचनम्   |
|------|------------|----------|---------|
| यथा- | रामेण      | तृतीया   | एकवचनम् |
| (क)  | माता       |          |         |
| (ख)  | पिता       |          |         |
| (ग)  | उत्तमाः    |          |         |
| (घ)  | विद्यानाम् |          |         |
| (ङ)  | पुष्पितेन  |          |         |

7. क्रियापदानां धातुं वचनं पुरुषं च लिखत-

|      | क्रियापदानि | धातुः | पुरुषः      | वचनम्   |
|------|-------------|-------|-------------|---------|
| यथा- | शोभते       | शोभ्  | प्रथमपुरुषः | एकवचनम् |
| (क)  | पूर्यन्ते   |       |             |         |
| (ख)  | सेवध्वे     |       |             |         |
| (ग)  | इच्छन्ति    |       |             |         |
| (घ)  | लभावहे      |       |             |         |

8.. श्लोकांशान् यथायोग्यं योजयत-

(अ)

- (क) सुखार्थिनः कुतो विद्या  
(ख) न शोभते सभामध्ये  
(ग) वृश्चिकस्य विषं पुच्छे  
(घ) वासितं तद्वनं सर्वम्

(ब)

- हंसमध्ये बको यथा।  
दुर्जनस्य तु सर्वाङ्गे ।  
सुपुत्रेण कुलं यथा।  
विद्यार्थिनः कुतस्सुखम्।

9. उदाहरणानुगुणम् अन्वयपूर्तिं कुरुत-

अधमाः धनमिच्छन्ति, धनं मानं च मध्यमाः।

उत्तमाः मानमिच्छन्ति मानो हि महतां धनम्॥

**अन्वयः** अधमाः धनम् इच्छन्ति, मध्यमाः धनं मानं च इच्छन्ति, उत्तमाः मानम् इच्छन्ति, महतां धनं मानः हि।

1. सुखार्थी चेत् ..... त्यजेत्, विद्यार्थी ..... सुखं .....; सुखार्थिनः विद्या .....; विद्यार्थिनः ..... कुतः।
2. तक्षकस्य ..... विषं, ..... मुखे विषं, ..... पुच्छे विषं दुर्जनस्य ..... विषम्।

**योग्यताविस्तारः -**

| पुरुषः      | एकवचनम् | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|-------------|---------|-----------|----------|
| प्रथमपुरुषः | लभते    | लभेते     | लभन्ते   |
| मध्यमपुरुषः | लभसे    | लभेथे     | लभध्वे   |
| उत्तमपुरुषः | लभे     | लभावहे    | लभामहे   |

एवं रम्, वन्द्, भाष्, धातूनां रूपाणि लिखत।

**राज्यस्य मूलं धर्मः।**